जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

एक मात्र नग्नता ही (मुक्ति का) मार्ग है, शेष सब उन्मार्ग हैं। - बिन्दु में सिन्धु, पृष्ठ-18

वर्ष : 25, अंक: 5 | **सम्पादक :** पण्डित रतनचन्द भारिल्ल | आजीवन शुल्क : 251 रुपये
जून (प्रथम) 2002 | **प्रबन्ध सम्पादक :** पं. अनुभवप्रकाश जैन एवं पं. संजीवकुमार गोधा | वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

आचार्य कुन्दकुन्द व आचार्य उमास्वामी पुरस्कार

भगवान महावीर के 2600 वें जन्मकल्याणक वर्ष के सुअवसर पर रविवार, 28 अप्रैल 2002 को अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान के जवाहरलाल नेहरु सभागार में कुन्दकुन्द भारती न्यास और जैन मित्र मण्डल द्वारा 'आचार्य कुन्दकुन्द पुरस्कार' एवं 'आचार्य उमास्वामी पुरस्कार' अर्पण समारोह आयोजित हुआ।

इस अवसर पर मंगल आशीर्वाद प्रदान करते हुये पूज्य आचार्यश्री विद्यानन्दजी मुनिराज ने कहा कि भगवान महावीर के जीवन की प्रत्येक घटना और उनके द्वारा बताया गया आत्म कल्याण का मार्ग प्रत्येक काल में हर व्यक्ति के लिये उपयोगी है और उसे अपना आदर्श बनाकर ही हम अपना जीवन मंगलमय बना सकते हैं।

समारोह में प्राकृत भाषा में विशेष कार्य करने के लिये दिये जानेवाले कुन्दकुन्द पुरस्कार के रूप में डॉ. नामवर सिंह को लोकसभा के पूर्व अध्यक्ष एवं विपक्ष के उपनेता शिवराज पाटिल ने अंगवस्त्र, भगवान महावीर का स्वर्णमण्डित लॉकेट, सम्मान-पत्र, स्मृति-चिन्ह एवं 1 लाख रुपये की राशि प्रदान की।

संस्कृत भाषा एवं साहित्य विषयक आचार्य उपास्वामी पुरस्कार से सम्मानित प्रो. वाचस्पति उपाध्याय को भी अंगवस्त्र, भगवान महावीर का स्वर्णमण्डित लॉकेट, सम्मान-पत्र, स्मृति-चिन्ह एवं 1 लाख रुपये की राशि प्रदान की गई।

समारोह का संयोजन एवं संचालन डॉ. सुदीप जैन ने किया।

वर्धमान महावीर स्मृति ग्रन्थ का लोकार्पण

दिल्ली : दिनांक 28 अप्रैल को आयोजित आचार्य कुन्दकुन्द, आचार्य उमास्वामी पुरस्कारों के समर्पण समारोह के शुभ अवसर पर पूर्व लोकसभा अध्यक्ष एवं वर्तमान विपक्ष के उपनेता श्री शिवराज पाटिल ने वर्धमान महावीर स्मृति ग्रन्थ का लोकार्पण किया।

जैन परम्परा के 24 वें तीर्थंकर भगवान वर्धमान-महावीर के 2600 वे जन्मकल्याणक वर्ष की पुण्यबेला में 260 ह्न 2 = 520 की शुभ संख्या को दृष्टिगत रखते हुये शास्त्राकार 520 पृष्ठों का यह विशालकाय ग्रन्थ मूलत: 4 खण्डों में वर्गीकृत है। परमपूज्य आचार्यश्री विद्यानन्दजी मुनिराज की पावन प्रेरणा एवं मंगल आशीर्वाद से निर्मित इस ग्रन्थ के प्रथम खण्ड में भगवान महावीर के जीवन और व्यक्तित्व-कृतित्व का, द्वितीय खण्ड में उनके दार्शनिक अवदान का, तृतीय खण्ड में उनकी परम्परा का अद्यावधि संक्षिप्त इतिवृत्त तथा चतुर्थ खण्ड में उनके उपदेशों एवं आगम साहित्य की माध्यम भाषा प्राकृत का संक्षिप्त परिचय समाहित है। अन्त में परिशिष्ट 1 में मनीषी लेखक-लेखिकाओं का तथा परिशिष्ट 2 में स्मृति ग्रन्थ में प्रस्तुत आलेखों की आधार सामग्री का संक्षिप्त उल्लेख है।

इसका संकलन एवं सम्पादन डॉ. सुदीप जैन ने किया है।

महावीर जयन्ती पर लिफाफा व डाक मोहर जारी

अजमेर (राज.) : यहाँ भगवान महावीर के 2600 वें जन्मकल्याणक के उपलक्ष में महावीर जयंती के पावन अवसर पर 25 अप्रैल 2002 को एक विशेष लिफाफा जारी हुआ तथा भारतीय डाक विभाग द्वारा एक विशेष मोहर लगाई गई। इस सुन्दर बहुरंगीय विशेष लिफाफे पर अजमेर में स्थित सोनीजी की नसियां के नाम से सुप्रसिद्ध श्री दिगम्बर जैन सिद्धकूट मंदिर परिसर का चित्र अंकित है।

राय बहादुर सर सेठ मूलचन्द नेमीचन्द सोनी द्वारा लाल पत्थर से निर्मित भगवान ऋषभदेव के मंदिर की प्रतिष्ठा 1865 को हुई थी। इस मंदिर के पीछे एक विशाल भवन बनाकर सन् 1895 में इसमें भगवान ऋषभनाथ के पाँचों कल्याणकों की सुन्दर स्वर्णरचित रचना की गई। सोने के वर्कों से मण्डित इस विशाल रचना को देखने के लिये दूर-दूर से श्रद्धालु आते हैं। सन् 1953 में यहाँ 82 फीट ऊँचे मानस्तंभ का निर्माण किया गया।

इस विशेष लिफाफे पर महावीर जयन्ती को डाक विभाग द्वारा लगाई गई विशेष मोहर पर दिगम्बर जैन मुनिराज के दर्शन करता भक्त दर्शाया गया है और 'बलिहारी गुरुदेव की' शब्द अंकित हैं। **- सुधीर जैन, सतना**

विधान एवं शिलान्यास समारोह सम्पन्न

फिरोजाबाद (रसूलपुर) : यहाँ दिनांक 19 से 21 अप्रैल तक श्री शीतलनाथ दिगम्बर जैन मंदिर के तत्त्वावधान में 170 तीर्थंकर महामण्डल विधान एवं शिखर शिलान्यास समारोह का भव्य आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित अशोककुमारजी सिरसागंज, पण्डित रमेशचन्दजी जयपुर, पण्डित विरागकुमारजी जबलपुर, पण्डित नवीनकुमारजी पोद्दार, पण्डित विपिनजी सिंघई, पण्डित सौरभकुमारजी पाण्डे एवं पण्डित अनंतवीर जैन का प्रवचनों एवं कक्षाओं के माध्यम से लाभ मिला। विधान का उद्घाटन श्रीपाल चन्द्रमोहनजी जैन ने किया। झण्डारोहण श्री पदमचन्दजी बजाज कोटा ने किया। शिखर शिलान्यासकर्ता श्री प्रेमचन्दजी बजाज परिवार, कोटा था।

इस अवसर पर आचार्य कुन्दकुन्द नैतिक शिक्षा समिति द्वारा 16 जून से 23 जून 2002 तक अतिशय क्षेत्र कम्पिल में बाल संस्कार शिविर लगाने की घोषणा की गई। **- सनतकुमार रपरिया**

सम्पादकीय –

हरिवंशपुराण : एक अनुशीलन 7

– रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे ....)

ये सभी कुलकर अपने-अपने नामों को सार्थक करनेवाले हुये। प्रसेनजित के पूर्व मरुदेव के समय तक भोगभूमि थी, एक ही माता-पिता से युगल पुत्र-पुत्री ही पति-पत्नी के रूप में जन्म लेते थे। मरुदेव से प्रसेनजित अकेले पुत्र ही उत्पन्न हुए। मरुदेव ने प्रसेनजित का विवाह करके विवाहविधि का प्रारंभ किया।

ये 14 कुलकर समचतुरस्र संस्थान (सुडौल शरीर) और वज्रवृषभनाराच संहनन (वज्र के समान सुदृढ़ शरीर) के धारक थे। इन्हें अपने-अपने पूर्वभव का स्मरण ज्ञान था। इनकी मनु संज्ञा थी अर्थात् ये मनु कहलाते थे।

इसी क्रम में अगले अष्टम सर्ग में इस युग के आदि तीर्थंकर भगवान आदिनाथ की विस्तृत चर्चा है। जिसका संक्षिप्त सार इसप्रकार है –

आठवें सर्ग में चौदहवें कुलकर और बाल तीर्थंकर ऋषभदेव के पिता राजा नाभिराय एवं उनकी पटरानी मरुदेवी के शारीरिक सौंदर्य तथा सामुद्रिक शास्त्र की दृष्टि से शुभ लक्षणों का नख-शिख वर्णन है।

महाकवि कालिदास, बाणभट्ट आदि लौकिक साहित्यकारों द्वारा किया गया लौकिक नाटकों एवं महाकाव्यों में शृंगाररस प्रधान वर्णन यद्यपि धर्मप्रेमियों को भी पच जाता है; क्योंकि उनसे वैराग्यवर्द्धक विषयों की अपेक्षा ही नहीं की जाती; परन्तु दिगम्बर आचार्यों के द्वारा रचित ऐसा शृंगार प्रधान चित्रण धर्मप्रेमियों को अटपटा लगता है। बहुत से पाठक तो सामूहिक स्वाध्याय में ऐसे प्रकरणों को छोड़कर ही आगे बढ़ जाते हैं।

किसी अपेक्षा उनका सोच सही हो सकता है; किन्तु इसके दो-तीन कारण मुख्य हैं। यदि हम इस ओर गौर करेंगे, थोड़ी उदारता से विचार करेंगे तो इसका औचित्य समझ में आ सकता है।

एक तो यह ग्रन्थ महाकाव्य के रूप में लिखा गया है और महाकाव्य की परिभाषानुसार प्रकृति वर्णन, युद्ध वर्णन, नायक-नायिका के संयोग-वियोग शृंगार का वर्णन, नारी सौंदर्य का नख-शिख वर्णन,नवरसों का निर्वाह, छन्द-अलंकार आदि साहित्यिक सुषमा महाकाव्य के अनिवार्य अंग माने जाते हैं, अन्यथा वह ग्रन्थ महाकाव्य की दृष्टि से सफल काव्य की कोटि में नहीं आता तथा अन्य महाकाव्यों के तुलनात्मक अध्ययन से उन्नीस साबित होता है, जो एक कविहृदय साहित्यकार को अन्दर से स्वीकृत नहीं होता।

दूसरी महत्त्वपूर्ण बात यह है कि – भावलिंगी मुनिराज नवजात शिशु की भांति निर्विकारी होते हैं। उनके अनन्तानुबंधी, अप्रत्याख्यान और प्रत्याख्यान क्रोध-मान-माया-लोभ एवं राग-द्वेषादि मनोविकार अत्यन्त क्षीण हो जाते हैं; अत: उन्हें तो सभी अंग समान ही दृष्टिगत होते हैं। उन्हें उनमें अश्लीलता दृष्टिगोचर ही नहीं होती।

तीसरी बात उनकी नायिका परमपूज्य तीर्थंकरों आदि 63 शलाका पुरुषों की पत्नियाँ एवं स्वयं पूज्य शीलवती नारियाँ हैं, जिनके चरित्र को पढ़-सुनकर श्रद्धा-भक्ति ही उमड़ती है; अत: इसे कोई दोष नहीं मानना चाहिये।

चौथी और अन्तिम बात यह है कि रागियों का मन राग की चर्चा में ही अधिक लगता है, अत: प्रकृत सौंदर्य और युद्धादि के कथन के माध्यम से प्रथमानुयोग में पतासा में कुनैन रखकर दिलवाने जैसी यह प्रथमानुयोग के कथन की शैली ही ऐसी है। यही कारण है कि इस हरिवंशपुराण के कथानक के साथ-साथ पूज्य आचार्य जिनसेन ने प्रारंभ के सर्गों में तो धर्म एवं तत्त्वज्ञान की ही विशेष चर्चा की है।

आज यह ग्रन्थ सर्वाधिक पढ़े जानेवाले ग्रन्थों में एक है और इसे पढ़कर असंख्य भव्य आत्माओं ने लाभ लिया है, ले रहे हैं और भविष्य में लेंगे।

जिन्हें अटपटा लगता है, यह उनकी स्वयं की विकारी मनोवृत्ति की कमजोरी है, जिसे पहचानना चाहिये। जिसप्रकार जिसके शरीर में किसी रोग के तत्त्व पनप जाते हैं, उन्हें उस रोग का टीका लगाने पर शरीर में कोई प्रतिक्रिया नहीं होती, वह टीका फूलता/सूजता नहीं है और जिसके शरीर में रोग से संघर्ष करने के तत्त्व होते हैं, रोग निवारक तत्त्व होते हैं, उसको लगाया गया टीका फूल जाता है; उसीप्रकार जिनका मन विकारी होता है, उसे ही गुप्तांगों एवं उरोजों के उभार आदि की चर्चा में अश्लीलता दृष्टिगत होती है, अन्यथा नारी के उरोज आदि गुप्तांग तो मातृत्व के प्रतीक हैं। बालकों को तो उनमें मातृत्व ही दिखाई देता है और मुनिराजों का मन भी बालकवत् निर्विकारी ही होता है; अत: दिगम्बर जैन आचार्यों की ऐसी कथनी में कोई आशंका करने की गुंजाइश ही नहीं है।

इस अष्टम सर्ग के प्रारंभ के 36 श्लोकों तक माता मरुदेवी के सौंदर्य का नख-शिख वर्णन है। पश्चात् श्लोक 55 तक तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव का जीव सर्वार्थसिद्धि से राजा नाभिराय और रानी मरुदेवी के यहाँ अवतरित होंगे, उनके छह माह पूर्व से इन्द्र की आज्ञा से कुबेर द्वारा रत्नों की वर्षा आदि का वर्णन, दिक्कुमारी देवियों द्वारा माता की नानाप्रकार से की गई सेवा का सरस चित्रण है। श्लोक 56 से 75 तक माता के सोलह स्वप्नों का विस्तृत वर्णन है। तत्पश्चात् माता के देखे सोलह स्वप्नों के फल महाराजा नाभिराय ने बताये। तदनन्तर लगभग 150 श्लोकों में इस सर्ग के अन्त तक ऋषभदेव के जन्मकल्याणक का सविस्तार वर्णन है।

नवम सर्ग में – बाल तीर्थंकर ऋषभदेव के जन्मोत्सव के उपरान्त उनके बाल्यकाल, युवावस्था, राज-काज, पारिवारिक जीवन में सर्वगुणसम्पन्न राजकुमारी नन्दा एवं सुनन्दा से विवाह, उनमें रानी नन्दा से भरत और ब्राह्मी तथा सुनन्दा रानी से बाहुबली और सुन्दरी उत्पन्न हुये। इनके अतिरिक्त राजा ऋषभदेव के 98 पुत्र और भी हुये।

तीर्थंकर ऋषभदेव की आयु 84 लाख पूर्व की थी और 83 लाख पूर्व तक वे गृहस्थ जीवन में राज-काज और भोग-विलास में अटके रहे। जब एक लाख पूर्व की आयु शेष रही, तब एक दिन नीलांजना नर्तकी का नृत्य करते-करते मौत का प्रसंग बन जाने से उन्हें संसार से वैराग्य हो गया और उन्होंने सम्पूर्ण राज-काज और भोग-विलास का त्याग कर जैनेश्वरी दीक्षा ले ली तथा कालान्तर में कैवल्य प्राप्त किया। इन्द्र ने समवशरण की रचना की, तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव का केवलज्ञानकल्याणक मनाया। दिव्यध्वनि हुई और जगत में भव्य जीवों को जैनधर्म के उपदेश द्वारा धर्मलाभ प्राप्त हुआ।

इसतरह नवम सर्ग में उक्त विषय को 224 श्लोकों में बहुत विस्तार के साथ साहित्यिक सुषमा बिखेरते हुये बालक ऋषभ से लेकर तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव की सम्पूर्ण जीवनयात्रा का सरस वर्णन किया गया है। **(क्रमश:)**

कहान सन्देश

मोक्षमार्ग का प्रथम सोपान

(सम्यग्दर्शन पुस्तक के आधार से)

(101 वीं किस्त)

(गतांक से आगे .....)

कोई जीव सम्यक्त्व में मात्र बाह्य निमित्त को (शास्त्र को) ही स्वीकारे और अन्तरंग निमित्तरूप से ज्ञानी को न स्वीकारे तो उसने वास्तव में सम्यक्त्व को ही नहीं जाना है। सम्यक्त्वरूप से परिणमित होकर जिसने दर्शनमोह के क्षयादि कर दिये हैं - ऐसे सम्यग्दृष्टि को ही सम्यक्त्व के निमित्तरूप से न स्वीकारते हुये जो जीव अकेले शास्त्र से अथवा किसी भी मिथ्यादृष्टि के निमित्त से भी सम्यक्त्व हो जाना मानता है, उसे तो सम्यक्त्व के सच्चे निमित्त का भी भान नहीं है। इस गाथा में सम्यक्त्व के अंतरंग और बाह्य दोनों निमित्तों का यथार्थ स्वरूप बताया है।

विरला: निश्रृण्वन्ति तत्त्वं विरला: जानन्ति तत्त्वत: तत्त्वं।
विरला: भावयन्ति तत्त्वं विरलानां धारणा भवति ।।279।।
तत्त्वं कथ्यमानं निश्चलभावेन गृह्णाति य: हि ।
तत् एव भावयति सदा अपि च तत्त्वं विजानाति ।।280।।

ह्न स्वामी कार्तिकेयानुप्रेक्षा

अर्थ - जगत में तत्त्व को विरले पुरुष सुनते हैं, सनकर भी तत्त्व को यथार्थरूप से विरले पुरुष ही जानते हैं तथा जानकर भी विरले ही तत्त्व की भावना अर्थात् बारंबार अभ्यास करते हैं और अभ्यास करके भी तत्त्व की धारणा तो विरलों को ही होती है।

भावार्थ - तत्त्व का यथार्थ स्वरूप सुनना, जानना, भाना और धारण करना उत्तरोत्तर दुर्लभ है। जो पुरुष गुरुओं द्वारा कहे गये तत्त्व के स्वरूप को निश्चयभाव से ग्रहण करते है, इसीप्रकार अन्यभावना छोड़कर उसे ही निरन्तर ध्याते हैं, वे पुरुष तत्त्व को जानते हैं।

योगसार में भी कहा है कि ह्न

विरले पुरुष ही जानते निजतत्त्व को विरले सुनें।
विरले करें निज ध्यान अर विरले पुरुष धारण करें।।

भगवान की परम शांत वीतरागी प्रतिमा के पास में समकिती एकावतारी इन्द्र-इन्द्राणी भी भक्ति से नाच उठते हैं। नन्दीश्वर नाम के आठवें द्वीप में रत्न के शाश्वत जिनबिम्ब हैं, वहाँ कार्तिक, फाल्गुन और अषाढ़ महिने में सुदी 8 से 15 तक देव भक्ति करने जाते हैं।

जिसप्रकार आत्मा में परमात्मापने की शक्ति सदा ही है और वह शक्ति प्रकटरूप से सर्वज्ञ परमात्मा में भी है। वे परमात्मा प्रकटरूप से जगत में सदा ही एक के बाद एक होते ही हैं अर्थात् परमात्मदशा को प्राप्त हुये आत्मा अनादि से हैं। उसीप्रकार उस परमात्मपने की प्रतिबिम्बरूप से जिनप्रतिमा भी अनादि से शाश्वत है, उनके पास में जाकर इन्द्र-इन्द्राणी जैसे एकावतारी जीव भक्ति से थनगन करते नाच उठते हैं।

उससमय भी अन्दर उन्हें भान है कि इस प्रतिमा का अस्तित्व इसके द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव में है और शरीर की ऊँची-नीची होने की क्रिया का अस्तित्व उसके द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव में है। मूर्ति में अथवा देह की क्रिया में मेरा अस्तित्व नहीं है। मेरा अस्तित्व तो मेरे द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव में है। ऐसे सम्यक्भान में स्वाश्रय से अपना स्वकाल आंशिकरूप से तो निर्मल हुआ है और अल्पकाल में द्रव्य की परमात्मशक्ति का पूर्ण आश्रय करने पर पूर्ण निर्मल स्वकाल प्रकट जायेगा अर्थात् स्वयं परमानन्दमय परमात्मा हो जायेगा। धर्म से अर्थात् आत्मा की सच्ची समझ से ही मनुष्य जन्म की सफलता है। धर्म का माहात्म्य समझने के लिये उसका ज्ञान करना चाहिये।

इस जीव को संसार में ढोर, कौये इत्यादि की देह अनंतबार मिलती है; परन्तु मनुष्य देह प्राप्त होना बहुत दुर्लभ है। उस मनुष्य देह में भी जो आत्मा की समझ नहीं करता है तो उसकी कोई कीमत नहीं है। विषय-भोग में तो कौआ-कुत्ते भी जीवन बिता देते हैं, मनुष्य होकर भी धर्म न समझे और विषय-भोग में ही जीवन गला दे तो पशु की अपेक्षा उसकी क्या विशेषता हुई ? इस शरीर की तो राख हो जाना है, आत्मा उससे जुदा है - ऐसे आत्मा को भूलकर जीव संसार में रखड़ता है और उसे पहिचान ले तो मुक्ति पाता है; परन्तु कोई भी दूसरे की अकृपा से रखड़ता नहीं है और उसकी कृपा से तरता नहीं है।

जिसप्रकार सरोवर में रहनेवाला हंस कमल की प्रीति छोड़कर हंसी से प्रीति करता है; उसीप्रकार शरीररूपी सरोवर में रहा हुआ जो चैतन्यहंस शरीर आदि की प्रीति छोड़कर अपने आत्मा की प्रीति करता है तो वह जगत में धन्य है। सरोवर में कमल खिले होने पर भी हंस अपनी हंसी की प्रीति छोड़कर उन पर प्रीति नहीं करता है; उसीप्रकार यह चैतन्यरूप हंस है और उसके पैसा-मकान इत्यादि जो बाहर की चीजें हैं, वे पूर्व के प्रारब्ध का फल है, उसकी प्रीति छोड़कर अपने आत्मा की प्रीति करता है तो निर्मल आनंद परिणति प्रकट होती है, जो आत्मा की हंसी है।

अरे भाई ! दो-चार घड़ी तू अपने आत्मा का विचार तो कर। तेरी तुझे कीमत नहीं है और तू दूसरे की कीमत आंकता है, यह शोभा नहीं देता। बाहर की चीजें तेरी नहीं हैं, वे तुम्हारे साथ नहीं जायेंगी, अत: उनसे जुदा आत्मा है, उसी से प्रीति कर धर्मी जीव को आत्मा की प्रीति करते-करते बीच में अणिमा-महिमा आदि ऋद्धियाँ सहजरूप से प्रकट हो जाती हैं; परन्तु वह उनकी प्रीति छोड़कर आत्मा की ही प्रीति करता है। शरीर का रूप मेरू पर्वत जितना बड़ा कर दे और परमाणु जितना छोटा कर सके। एक गुफा में भी करोड़ो मनुष्य बैठ जायें, शरीर का वजन करोड़ो मन कर सके, ऊपर से देव को उतारना हो तो उन्हें उतार ले ह्न ऐसी-ऐसी सिद्धियाँ धर्मात्मा को प्रकट होती हैं, पर उनकी प्रीति तो संसार में रखड़ने का कारण है।

धर्मी जीव उनसे प्रीति नहीं करता; परन्तु आत्मा से ही प्रीति करता है। मूर्ख ब्राह्मण की तरह वह चैतन्य चिन्तामणि को बाह्य विषयों में व्यर्थ खोता नहीं है। **(क्रमश:)**

शुद्ध घी के नाम पर मटनमेलो (चर्बी) खा रहे हैं !

आपको जानकर आश्चर्य होगा कि बाजार में शुद्ध घी के समान्तर मटनमेलो (चर्बी) युक्त नकली घी का व्यापार जोरों से चल रहा है। शुद्ध घी की तरह हू-बहू लगनेवाला बनावटी तेलों के मिश्रण, रंग एवं एसेन्स के साथ बनाये जानेवाले इस घी को बाजार में 'डीस्को घी' कहा जाता है।

अच्छे आकर्षक पाउच छपवाकर सुन्दर अथवा धार्मिक नाम लिखकर डीस्को घी की ये पैकिंग शुद्ध घी के नाम से बाजार में दुकानदारों के लिये अच्छे मुनाफा का कारण बन रही हैं। प्राप्त जानकारी के अनुसार अलग-अलग ब्राण्डों के नाम से बिक रहे पैकेटों पर एगमार्क लेबल लगे होने से खरीददार विश्वास के साथ लेता है। 80 से 100 प्रतिशत लाभवाले इस व्यवसाय में फूड इंस्पेक्टरों की मिली-भगत के कारण विकास हो रहा है। व्यापारियों को ज्यादा कमीशन, फूड इन्सपेक्टरों को रिश्वत एवं उत्पादकों को तगड़ा नफा मिलने से सजा की बात तो दूर; किन्तु इन पर कोई रोक-टोक भी नहीं रही। 'एगमार्क' लेते समय संस्था को नमूनेरूप में असली घी भरकर भेजा जाता है।

नकली घी बनाने में पामोलीन, वेजीटेबल फेट, बटर ऑइल एवं मटनमेलो का उपयोग किया जाता है, प्रत्येक उत्पादक की प्रक्रिया अलग-अलग होती है। कई उत्पादक वेजीटेबल घी एवं मटनमेलो का मिश्रण करते हैं तो कई बटर ऑइल के साथ मटनमेलो अथवा पामोलीन एवं मटनमेलो का मिश्रण करते हैं। जिसमें 30 प्रतिशत पामोलीन 10 प्रतिशत बटर ऑइल एवं 60 प्रतिशत मटनमेलो का मिश्रण होता है।

लोगों को लगता है कि शुद्ध घी दानेदार होना चाहिये। दानेदार घी देखकर लोग खुश हो जाते हैं; परन्तु पामोलीन एवं मटनमेलो के मिश्रण को दानेदार बनाना कोई कठिन कार्य नहीं। उपर्युक्त मिश्रण को दानेदार बनाने के लिये कपूरी पान (नागरवेल पान) का उपयोग किया जाता है। उत्पादक 10 किलो पामोलीन-मटनमेलो के मिश्रण में 50 से 80 नागरवेल के पान डाल देते हैं एवं दूसरे दिन पान निकालने पर केमिकल रीयेक्शन के कारण उपर्युक्त मिश्रण दानेदार होने का आभास उत्पन्न करता है। जिसे सुन्दर पेकिंग में नियमित व्यापारियों को पहुँचा दिया जाता है। व्यापारी ग्राहक को देते हैं। ग्राहक दानेदार घी को शुद्ध देशी घी समझकर खुशी से खरीद लेते हैं। व्यापारी को 500 ग्राम की एक पेकिंग में 30 रुपये का तगड़ा नफा होता है।

कत्लखानों में बड़े जानवरों के कत्ल से भरपूर मटनमेलो निकलता है। एक जमाने में मात्र साबुन बनाने में मटनमेलो का उपयोग होता था। आज मटनमेलो के इतने खरीददार होने से साबुन बनानेवाले मटनमेलो की जगह अन्य रासायनिक तैलीय पदार्थ का उपयोग कर रहे हैं। शुद्ध घी के नाम पर निर्दोष जनता ने पिछले 10 वर्षों में लाखों टन मटनमेलो को पेट में डाल दिया है।

पिछले वर्षों में बायपास सर्जरी के किस्से बढ़ने का यह कारण भी संभव है। आज जिस भाव में घी बाजार में मिल रहा है, उससे भी ये सारी बातें पुख्ता होती हैं; क्योंकि शुद्ध घी इस भाव में मिलना संभव ही नहीं है।

शुद्ध खान-पान एवं अहिंसा में विश्वास रखनेवालों के सामने यह बहुत बड़ी चुनौती है। क्या हमारी नामधारी संस्थायें एवं समाज के नेता इस ओर ध्यान देकर कोई ठोस कदम उठायेंगे ?

- जे. के. संघवी

सम्पादक-शाश्वत धर्म, ठाणे, फोन-5442059

पर्यटन (तीर्थदर्शन)

कुकुभ ग्राम (कल्याणक क्षेत्र)

मार्ग-स्थिति : काकन्दी से 16 कि.मी. दूर कच्चे मार्ग पर कुकुभ ग्राम है।

भगवान पुष्पदंत की दीक्षा व ज्ञान कल्याणकों की भूमि कुकुभ ग्राम में पुष्पकवन था, जिसे आज कुहाउ के नाम से जाना जाता है। प्राचीन काल में यहाँ अनेक जिनालय, स्तूप एवं मानस्तंभ रहे होंगे। वर्तमान में ग्राम के बाहर 24 फीट ऊँचा अबतक का प्राप्त प्राचीन विशालतम मानस्तंभ है जिस पर पाली भाषा अंकित लेख से ज्ञात होता है कि गुप्त संवत् 141 में समुद्रगुप्त के शासनकाल में इसका निर्माण हुआ था। स्तंभ पर पार्श्वनाथ की व अन्य प्रतिमायें हैं।

वाराणसी-काशी (कल्याणक क्षेत्र)

मार्ग-स्थिति : दिल्ली-कलकत्ता रेल लाइन पर वाराणसी प्रमुख रेलवे स्टेशन है। यह अयोध्या से 132 कि.मी. एवं इलाहबाद से 122 कि.मी. दूर है।

हिन्दुओं एवं बौद्धों का परम पवित्र तीर्थस्थल वाराणसी जैनधर्म के सातवें तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ एवं तेइसवें तीर्थंकर पार्श्वनाथ के चार-चार कल्याणकों की भूमि होने से महान पूजनीय स्थल है। कल-कल करती पावन गंगा के तट पर भदैनी घाट क्षेत्र को भगवान सुपार्श्वनाथ की जन्मभूमि माना जाता है तथा इसी काशी नगर में भगवान के गर्भ, तप व केवलज्ञान कल्याणक भी सम्पन्न हुए थे। इस घाट पर, जो बाबू छेदीलाल घाट के नाम से प्रसिद्ध है, दिगम्बर जैन मंदिर है; जहाँ सुपार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा व चरण चिन्ह विराजमान हैं। निकट ही दिगम्बर जैन शिक्षा का प्रमुख केन्द्र स्याद्वाद महाविद्यालय है। विद्यालय भवन की छत पर भी जिनालय है, जिसके गर्भगृह में भगवान सुपार्श्वनाथ की भव्य प्रतिमा है।

वाराणसी-काशी के दूसरे कोने पर भेलूपुरा मोहल्ले को भगवान पार्श्वनाथ की जन्मभूमि माना जाता है। साथ ही मान्यता है कि भगवान के मोक्ष कल्याणक के अलावा अन्य कल्याणक भी इसी वाराणसी में सम्पन्न हुए थे। यहाँ धर्मशाला के आगे चौक में दिगम्बर व श्वेताम्बर सम्प्रदायों का सम्मिलित जिनालय है। मुख्य वेदी में संवत् 1634 में प्रतिष्ठित सप्तफण की पार्श्वनाथ पद्मासन प्रतिमा है। समीपस्थ मंदिर में भी संवत् 1664 में प्रतिष्ठित सवा तीन फीट ऊँची भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा है। इसके निकट बाजार की ओर भव्य शिखरबन्द मंदिर है, जिसकी वेदी पर स्वर्ण का सुन्दर चित्रांकन तथा दीवारों पर पौराणिक कथानकों का कलात्मक अंकन है।

वाराणसी में आचार्य समंतभद्र ने विधर्मियों का मानमर्दन करने के लिये शिवप्रतिमा के समक्ष 'स्वयंभूस्तोत्र' की रचना की, जिससे शिव पिंड फटकर उसमें से भगवान चंद्रप्रभ की प्रतिमा प्रकट हुई। महाकवि बनारसीदासजी ने लगभग 400 वर्ष पूर्व अपने अर्द्ध कथानक में पार्श्वनाथ की जन्म-स्थली बनारस का जिक्र किया है।

यहाँ 'बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय' विश्वप्रसिद्ध शिक्षा का केन्द्र है।

आवास : भेलूपुर एवं मैदाग्नि में धर्मशालायें हैं।

वीतराग-विज्ञान ज्ञानयज्ञ योजना प्रथम वर्ष का परीक्षा परिणाम

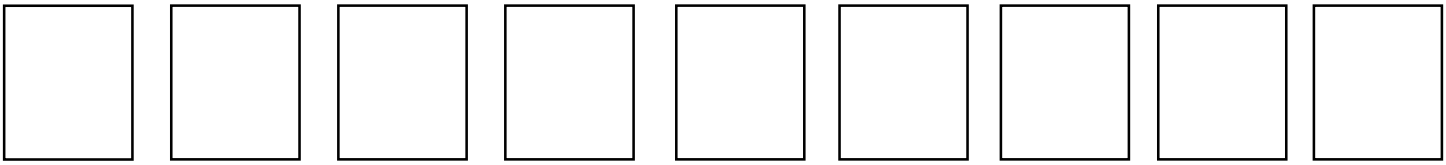

श्वेतल शाह | अलका जैन | डीसेंटबाला | रुचि विजय जैन | मंजू दोशी | मिस्त्री निलेशा | रेखा विजय जैन | सौरभ जैन | जयश्री फडे

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन बोरीवली मुम्बई द्वारा आयोजित वीतराग-विज्ञान ज्ञानयज्ञ योजना का जुलाई 2000 से जुलाई 2001 तक सम्पूर्ण देश में कुशलतापूर्वक संचालन किया गया।

इस योजना के अंतर्गत समस्त जैन समाज को जैनदर्शन का प्राथमिक ज्ञान रोचक एवं सरल प्रश्नोत्तर के माध्यम से कराया गया। इसकी आधारभूत पुस्तकें बालबोध पाठमाला भाग-1, 2, 3 थीं। इस योजना में सम्पूर्ण भारतवर्ष के करीब 100 केन्द्रों ने प्रारंभ से अंत तक सक्रिय भाग लिया तथा धर्मलाभ की दृष्टि से पूरे देश में हिन्दी, गुजराती एवं मराठी भाषा के कुल 320 केन्द्रों को प्रश्नोत्तर-पत्र भेजे गये। इसमें उत्तरप्रदेश की मेरठ जैसी शाखायें भी सम्मिलित हैं, जिन्होंने अपने स्तर पर 500 विद्यार्थियों की परीक्षा का आयोजन किया।

इस परीक्षा परिणाम में उन्हीं विद्यार्थियों को शामिल किया गया है, जिन्होंने सातों मासिक परीक्षाओं एवं वार्षिक परीक्षा में भाग लिया है। इसमें **प्रथम स्थान** श्वेतल शाह मुम्बई एवं अलका जैन जबलपुर, **द्वितीय स्थान** सुजाता गोयनका बारां, **तृतीय स्थान** माला जैन डोंगरगढ़, **चतुर्थ स्थान** डीसेंटबाला खंडवा, **पंचम स्थान** रुचि विजय जैन अलवर, **षष्टम स्थान** स्वर्णलता प्रदीप सौगानी एवं मंजू दोशी थाणा-मुम्बई, **सप्तम स्थान** विनिता जैन डोंगरगढ़, **अष्टम स्थान** इन्द्राबेन कोठारी दहेगाम, **नवम स्थान** मिस्त्री निलेशा अहमदाबाद, **दशम स्थान** रेखा विजय जैन अलवर, सौरभ जैन पंचशीलनगर भोपाल एवं जयश्री फडे अकलूज ने प्राप्त किया। यहाँ केवल उन्हीं परीक्षार्थियों के फोटो प्रकाशित किये जा रहे हैं, जिनके फोटो हमारे पास उपलब्ध हैं।

इन प्रथम 10 विद्यार्थियों को क्रमश: 1000, 750, 500, 400, 300, 250, 250, 250 , 250, 250 रुपयों का नकद पुरस्कार एम.ओ. द्वारा भेजा जायेगा। साथ ही सभी उत्तीर्ण विद्यार्थियों को प्रमाण-पत्र तो दिये ही जायेंगे।

उक्त योजना के सफल एवं सक्रिय क्रियान्वयन में वैसे तो सभी केन्द्राध्यक्षों ने हमारा सहयोग किया ही है; तथापि प्रथम 10 सर्वाधिक सक्रिय संयोजकों को भी पुरस्कृत करते हुये हमें हार्दिक प्रसन्नता है, जिनके नाम निम्नानुसार हैं- 1. श्रीमती लता अभयकुमार जैन छिन्दवाड़ा 2. पण्डित अजित शास्त्री अलवर 3. श्री आदीश जैन आत्मार्थी ट्रस्ट दिल्ली 4. श्री नरेन्द्र जैन जबलपुर 5. श्री जयश्री चक्रेश्वर अकलूज 6. श्री अनिल जैन काजीपुरा भोपाल 7. श्रीमती सरोज शाह अहमदाबाद 8. श्री अरुण जैन खण्डवा 9. श्री प्रशान्त शाह मलकापुर 10. श्रीमती सविताबेन शाह अहमदाबाद।

- अल्पना भारिल्ल
निर्देशक, वीतराग-विज्ञान ज्ञानयज्ञ योजना

उत्तम क्षमा

न कोई मेरा शत्रु है न मित्र, मैं स्वयं वीतरागी ज्ञानी, ज्ञाता-दृष्टा हूँ। मेरे में उत्तम क्षमा सदा ही निवास करती है। न मैं कभी कोई अपराध करता हूँ, न दूसरा कोई मेरे साथ अपराध करता है; इसलिये जैसी मेरे में उत्तम क्षमा है, वैसी ही सबमें उत्तम क्षमा है।

इस उत्तम क्षमा की सत्ता में द्वेष की जरा भी मात्रा नहीं दिखलाई पड़ती है। इसका रंग सदा ही सुहावना और शुक्ल है - सब जीव मेरे समान हैं। न कोई कम है न कोई अधिक। सब ही असंख्यात प्रदेशी, सब ही ज्ञान-सुखादि अनंत गुणों के धनी, सब ही परमानन्दमय अविनाशी हैं। समतासमुद्र में मैं और सब आत्मायें डूब रही हैं। सम्यग्दर्शनादि रत्नत्रय का आभूषण सब ही में शोभायमान है। सब ही त्रिलोकस्वामी हैं, सब ही स्वाधीन हैं। परस्पर क्षमा मांगने की व क्षमा करने की कोई जरूरत नहीं है।

हे ! उत्तम क्षमे ...! तू चिरकाल हमारे हृदय में निवास कर। तेरी मनोहर मूर्ति परम आह्लादकारी और सदा हितकारी है। धन्य हैं वे महात्मा जो तेरा दर्शन नित्य करते हैं, तू मुक्तितिया की परम सखी है।

- ब्र. शीतलप्रसादजी, (निश्चय धर्म का मनन, पृष्ठ-231)
- प्रेषक, भबूतमल भण्डारी, बैंगलोर

सी. डी. प्रवचन का शुभारंभ

रायपुर (छत्तीसगढ़) : यहाँ दिनांक 2 अप्रैल को आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के कम्प्यूटर सी.डी. प्रवचन का शुभारंभ विदुषी बहिन श्रीमती कंचनबाईजी धर्मपत्नी श्री दुलीचंदजी गिड़िया खैरागढ़ के हस्ते अनेक भाई-बहिनों की उपस्थिति में सानन्द सम्पन्न हुआ। **- समकित सिंघई**

पाठशाला का शुभारंभ

जयपुर : यहाँ दिगम्बर जैनमंदिर गुमानीरामजी, घी वालों का रास्ता में दिनांक 19 मई 2002 से बालकों एवं युवाओं में जैनधर्म एवं दर्शन के आधारभूत सिद्धान्तों का ज्ञान कराने के उद्देश्य से एक रविवारीय साप्ताहिक पाठशाला का शुभारंभ किया गया। कार्यक्रम का मंगलाचरण कु. शानू जैन किया।

ज्ञातव्य है कि यहाँ शिक्षण-कार्य श्री संजीवकुमारजी गोधा द्वारा कराया जा रहा है। **- सुबोध पाण्ड्या**

पाठकों के पत्र

नैणसी के सम्पादक श्री अम्बू शर्मा लिखते हैं कि 'जैनपथप्रदर्शक नियमितरूप से आ जाने से पूरे घर में एक अद्भुत शान्तिभावना का प्रवेश हो रहा है। बहुयें भी इसे पढ़ने में रुचि लेने लगी हैं, नहीं तो देवरानी-जेठानी जैसी नोक-झोंक में ही दिन व्यतीत हो जाया करता था। बड़ों की शान्ति-प्रियता अब बच्चों में भी उदात्त-भाव पनपा रही है। पारिवारिक सदस्यों के स्वभाव में मृदुता आना आपके पाक्षिक के पढ़ने में रुचि होने का ही सत्प्रभाव है।'

तत्त्वचर्चा

समयसार का सार 47

गतांक से आगे

– डॉ॰ हुकमचन्द भारिल्ल

आशय यह है कि उपयोग के प्रयोगानुसार अर्थात् उपयोग यदि आत्मा में चला जाता है तो बाह्य में सात कर्मों का उदय आकर खिर जाता है, उसका फल नहीं मिलता है। जैसे कि पूर्व में उदाहरण दिया था कि जिसप्रकार तत्काल परिणीत बालस्त्री उपभोग के योग्य नहीं है। वह अपनी विवाहिता है, फिर भी उपभोग के योग्य नहीं है। जब वह परिणीता बालस्त्री तरुण होती है, तब उपभोग के योग्य होती है। इसीप्रकार सत्ता में पड़ा हुआ कर्म भोगने योग्य नहीं है। वह कर्म जब उदय में आये, तब वह भोग के योग्य होता है।

यद्यपि वह भोग के योग्य तरुण स्त्री, पुरुष को बाँधने में समर्थ है; तथापि वह स्त्री कितनी ही सुंदर, कितनी ही जवान, कितनी आकर्षक क्यों न हो; लेकिन यदि पुरुष का उपयोग ही उसकी ओर नहीं है, अपने व्यवसाय में, अध्ययन में लग रहा है तो वह उसको बाँध नहीं सकती; क्योंकि वह उपयोग के प्रयोगानुसार ही बांधती है। अंदर में उसका स्त्री के प्रति राग है और उसका उपयोग उधर है तो वह उसको बांधती है। सात फेरे पड़ने से, कच्चे धागे में बंधने से कोई फर्क नहीं पड़ता, उपयोग यदि उस तरफ है तो वह बंधन का कारण है। उपयोग के प्रयोगानुसार ही वह बंध का कारण है। इस उदाहरण को स्त्री, पुत्र, मकान जायदाद सब पर घटित कर लेना।

यदि हमारा उपयोग स्त्री, पुत्र, मकान जायदाद पर है तो ये हमारे लिए बंधन के कारण हैं। उपयोग के प्रयोगानुसार ही ये भोगने में आएँगे; लेकिन उपयोग यदि वहाँ नहीं होगा तो ये हमारे भोगने में आनेवाले नहीं हैं, बिना भोगे ही ये कर्म खिर जाएँगे। वे कर्म एक स्थान पर रहते नहीं, गंगा के पानी जैसे बहते ही रहते हैं। कर्म का उदय आ गया है; लेकिन यदि उसी समय हम आत्मा के ध्यान में लग गए हैं तो कर्म तबतक रुकते नहीं है। जिसप्रकार गंगा का पानी बह रहा है; लेकिन हम अपनी आत्मा में गए हैं और हमें आत्मा से बाहर आने के बाद पानी पीना है तो गंगा का वह पानी रुक नहीं जाता, वह बहता ही रहता है और जब तुम बाहर आओगे तब तुम्हें जो पानी पीना था, वह तो बहकर आगे चला जाता है; उसीप्रकार आत्मा के ध्यान में जाने के पश्चात् जो कर्म उदय में आते हैं, वे बिना फल दिए ही खिर जाते हैं।

देखो ! कितना कमजोर है हमारा शत्रु ! जब बंधा था, तब भी कुछ नहीं कर सका; वर्षों तक हमारे पास सत्ता में पड़ा रहा; तब भी कुछ नहीं कर सका। जब उदय में आया, तब हमारा उपयोग इसके ऊपर नहीं था, राग इसमें नहीं था, दूसरे स्थान पर हमारा उपयोग था; अतः तब भी कितने ही कर्म ऐसे ही फल दिए बिना खिर गए।

इसे हम इस उदाहरण से अच्छी तरह समझ सकते हैं। समझ लीजिए कि किसी ने मुझे 20 रुपए की एक किताब भेंट दी; उसमें हमारा पुण्य खर्च होता है। यदि किताब हमें भेंट में नहीं मिलती है और हम खरीदते हैं, तब भी हमारा पुण्य का उदय खर्च होता, यह कर्म का गणित है। इसमें मात्र किताब खरीदने या भेंट मिलने पर ही पुण्य खर्च नहीं हुआ; अपितु जबतक वह किताब हमारे पास रही, वह पुण्य के उदय से ही रही है। आशय यह है कि जबतक किताब हमारे पास रही; तबतक प्रतिसमय पुण्य खर्च हुआ। एक बार पुण्य खर्च होकर वह चीज मिल गई और अमर्यादित समय तक हमारे पास रहेगी – इस भ्रम में कभी मत रहना।

यह घर के मकान में रहने जैसा नहीं है, होटल के कमरे में रहने जैसा है। जैसे कि हजार रुपए रोज देकर होटल के एक कमरे में रहते हैं, जितने दिन उस होटल में रहते हैं, उतने दिन का किराया देना होता है। होटल में आप कबतक ठहर सकते हैं ? जबतक एक हजार रुपए एक दिन का किराया देते रहेंगे। इसीप्रकार सभी अनुकूल संयोगों में हमारा निरन्तर पुण्य खर्च होता है।

हमें अनुकूल पत्नी मिलती है तो भी वह पुण्य के उदय से ही मिलती है। जबतक हमारा निरंतर पुण्य खर्च होता रहता है, तबतक वह पत्नी अनुकूल बनी रहती है। हमारा पुण्य खत्म होता है और जब पाप का उदय आता है, तब वही पत्नी प्रतिकूल हो जाती है। ऐसे ही पति, पुत्र इन सभी संयोगों का समझ लो। कितनी विडम्बना है कि जिसे हम परिग्रह का संग्रह कहते हैं वह पुण्य के उदय से आता है और इसी की सम्हाल में न जाने कितने गुणा पुण्य खर्च होता रहता है।

हमारे पास पुण्योदय से दस मकान हैं और स्त्री–पुत्रादिक सब अनुकूल हैं। हमारे पुण्योदय से जो चीजें प्राप्त हैं, उन सभी को एक साथ तो भोग नहीं सकते हैं। हमारे पास 25 प्रकार की मिठाईयाँ हैं, 10 कारें रखी हैं; लेकिन एक ही समय में इन्हें हम भोग नहीं सकते। उपयोग के प्रयोगानुसार जिसमें हमारा उपयोग रहेगा, जिधर हमारा राग दौड़ेगा; वही वस्तु हमारे भोगने में आयेगी। अन्य सब वस्तुएँ भी तो हमारे पुण्य का उदय खर्च होने से ही हमारे अनुकूल हैं; लेकिन तब भी हम उन्हें नहीं भोग रहे हैं।

हमने 10 कमरे होटल में बुक किए, लेकिन एक ही कमरे में हम रह रहे हैं, भोगने में एक ही आ रहा है; ऐसी स्थिति में हमने कितना ही पुण्य क्यों न कमा लिया हो और बहुत भोग

सामग्री प्राप्त कर ली हो; लेकिन उपयोग यदि हमारा वहाँ नहीं रहा और भोगने का भाव भी नहीं रहा, तो सारे भोग आकर खिर जाएँगे। उन्हें आप रोक नहीं सकते। वे तो समय पूरा होने पर चले ही जायेंगे। सोचो तब क्या होगा ?

भाई ! हम तो इंतजार कर रहे थे कि वह परिणीता बालस्त्री जवान हो जाय। अब जब वह जवान हुई है तो हमारा उपयोग वहाँ नहीं है, हमारा उपयोग व्यवसाय में लग गया है और उसमें ही ऐसा रच–पच गया है कि उसी उद्देश्य से परदेश चले गए और एक वर्ष तक आए ही नहीं। तो क्या वह बालस्त्री जो 20 साल की तरुणी हुई है, हमारे एक वर्ष परदेश जाने के पश्चात् 20 वर्ष की ही रहेगी या 21 वर्ष की हो जाएगी ? इसके बाद भी यदि 25 वर्ष तक तुम्हारा उपयोग व्यवसाय में ही रहा तो तबतक उस स्त्री की जवानी निकल जाएगी, वह वृद्धा हो जाएगी और इसमें तुम्हारा पुण्य निरंतर खर्च होता ही रहेगा। इसमें ऐसा नहीं है कि पुण्य भोगने में नहीं आएगा तो वह तुम्हारे लिए रुका रहेगा, वह आगे काम आनेवाला नहीं है।

कई लोग ये कहते हुए फूले नहीं समाते कि 'मेरा एक बंगला दिल्ली में है और एक बंगला मुम्बई में है, एक शिखरजी में और एक कलकत्ता में है; हर स्थान पर चौबीसों घंटे नौकर रहते हैं, हम वहाँ जाते हैं तो हमारा कमरा हमेशा स्वच्छ और रसोई के लिए तैयार रसोइया मिलता है।'

अरे भाई ! एक ही व्यक्ति के पास इतने बंगले हैं कि कभी–कभी तो वह इन बंगलों में सारी जिन्दगी में एक बार भी नहीं जा पाता; क्या इन बंगलों के लिए प्रतिदिन खर्चा नहीं होता ? इनके रख–रखाव, व्यवस्था के लिए रुपए खर्च होते है; लेकिन यहाँ मात्र पैसा ही खर्च नहीं होता, हमारा पुण्य भी खर्च होता है।

इसप्रकार अज्ञानियों के पुण्य–पाप भोगने में आते हैं, परन्तु ज्ञानी तो पुण्य–पाप के भोक्ता हैं ही नहीं, ज्ञानी तो कभी स्वयं को पुण्य–पाप का कर्त्ता–भोक्ता मानता ही नहीं है। वह स्वयं को मात्र उसका ज्ञाता–द्रष्टा मानता है। ज्ञानी का शिखरजी का बंगला उसके लिए मात्र ज्ञान का ज्ञेय है। यदि ज्ञानी से इसके बारे में पूछते हैं तो ज्ञानी कहता है कि यह मेरे ज्ञान में है कि मेरा एक बंगला शिखरजी में है। यदि ज्ञानी से पूछते हैं कि यह किसने बनाया है ? तब ज्ञानी का उत्तर यह होता है कि ''मैं इसका न कर्त्ता हूँ, न भोक्ता हूँ, मैं इसका मात्र ज्ञाता–द्रष्टा हूँ। मैं चक्रवर्ती भी हो जाऊँगा, तो भी मैं मात्र चक्रवर्तित्व का ज्ञाता ही रहूँगा, चक्रवर्तित्व का कर्त्ता–भोक्ता नहीं हो जाऊँगा।'' यही कारण है कि ज्ञानी निरास्रव है।

'उपयोग के प्रयोगानुसार बंध होता है' यही आस्रवाधिकार का मूल प्रदेय है। इसीलिए इसमें ऐसा आया है कि बंध का कारण क्या है ? इसकी चर्चा करते हुए मूल गाथा में लिखा है कि ज्ञान गुण बंध का कारण है। आस्रवाधिकार में बंध के कारणों में ज्ञानगुण की चर्चा है तो क्या ज्ञान गुण बंध का कारण हो सकता है ? अरे भाई ! ज्ञान तो आत्मा का स्वभाव है, आत्मा का स्वभाव बंध का कारण कैसे हो सकता है ? ज्ञान कभी बंध का कारण हो ही नहीं सकता।

यद्यपि यह सत्य है कि ज्ञान कभी बंध का कारण नहीं हो सकता; लेकिन ऐसा कौनसा कारण है, जिससे ज्ञान को बंध का कारण कहा जा रहा है; इसे समझना अत्यंत आवश्यक है।

ज्ञान जिसमें है, बंध उसको ही होता है। जिसमें ज्ञान नहीं है – ऐसे रुमाल इत्यादि को बंध नहीं होता है। पुद्गल द्रव्य को कर्म का बंध नहीं होता; जिसमें ज्ञान गुण है – ऐसे आत्मा को ही कर्म का बंध होता है। बस इतनी अपेक्षा से ज्ञान को बंध का कारण कह दिया है। जबकि इसी समयसार में लिखा है कि – ज्ञानमेव विहितं शिवहेतुः।

ज्ञान तो शिव का हेतु अर्थात् मुक्ति का कारण है। तो क्या वास्तव में ज्ञान बंध का कारण है ?

नहीं, अगली ही गाथा में ऐसा कहा है कि ज्ञान नहीं; अपितु ज्ञानगुण का जघन्य परिणमन ही बंध का कारण है। ज्ञानगुण का जघन्य परिणमन अर्थात् जैसा उसका स्वभाव है वैसा पूरा वर्तमान पर्याय में विकसित नहीं होना अर्थात् क्षायिक ज्ञान न होकर क्षयोपशम ज्ञान होना; ज्ञान जबतक क्षायोपशमिक होगा, तबतक बंध होगा। इसप्रकार ज्ञानगुण के जघन्य परिणमन को ही बंध का कारण कहा है। यही कारण है कि ज्ञान को बंध का कारण कहा जाता है।

जैसे किसी कवि सम्मेलन में प्रसिद्ध कवि को आमन्त्रित किया; लेकिन वह किसी कारणवश नहीं आया तो जनता रुष्ट हो जाती है। अच्छे कवि का नाम बताकर टिकिट बेचते हो – ऐसा आरोप लगाते हुए, जनता संयोजक की पिटाई कर देती है। संयोजक अस्पताल में हो और वह कवि उनसे मिलने आवे और पूछे कि ये कैसे, क्या हुआ ?

तब संयोजक कहता है कि 'आपकी कृपा है।'

तब वह कवि कहता है कि 'हम आए ही नहीं तो हमारे कारण ये कैसे हो सकता है, हम आए ही नहीं तो हम कारण कैसे हो सकते हैं ?'

तब संयोजक कहता है कि 'आपका नहीं आना ही कारण है।' ऐसे ही ज्ञान को बंध का कारण कैसे कह दिया ? ज्ञानगुण के जघन्य परिणमन के कारण ही ज्ञान को बंध का कारण कहा है। ऐसा कभी नहीं कहा जाता कि आपका नहीं आना पिटाई का कारण हुआ। लोक में तो ऐसा ही कथन होता है कि आपके कारण ही ऐसा हुआ; उसीप्रकार ज्ञानगुण के जघन्य परिणमन के स्थान पर ज्ञानगुण को ही बंध का कारण कह दिया है।

(क्रमशः)

रजिस्ट्रेशन आर. एन. आई. 31109/77

बाल संस्कार शिविर सानन्द सम्पन्न

अशोकनगर (गुना) : यहाँ 1 मई से 8 मई 2002 तक बाल संस्कार शिविर का भव्य आयोजन किया गया । इस अवसर पर पण्डित प्रमोदकुमारजी शास्त्री शाहगढ़ के प्रवचन एवं कक्षाओं का लाभ मिला।

शिविर में 160 विद्यार्थियों ने रजिस्ट्रेशन कराया, जिसमें से 108 बच्चों ने परीक्षा में सम्मिलित होकर अच्छे अंक प्राप्त किये। शिविर का उद्घाटन श्री प्रकाशचन्दजी सोगानी ने किया। सभी कार्यक्रम प्रात: 6.30 बजे से प्रारंभ होते थे, जिसमें प्रात: 9 से 10 बजे तक कक्षायें चलाई जाती थीं। दोपहर में प्रौढ़ कक्षायें एवं सायंकाल पुन: बाल कक्षाओं के आयोजन के पश्चात् जिनेन्द्र भक्ति का कार्यक्रम होता था। रात्रि में 8 से 9 बजे तक प्रवचन होते थे। रात्रि में छोटे-छोटे बच्चों ने ज्ञानवर्द्धक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये।

शिविर में बच्चों को के.के.पी.पी.एस. उज्जैन द्वारा किट प्रदान की गई। अन्त में परीक्षा में सम्मिलित छात्रों को पुरस्कार व प्रमाण-पत्र प्रदान किये गये।

शिविर की सफलता में अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन, मुमुक्षु मण्डल एवं महिला मण्डल के सदस्यों का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ।

- अरुणकुमार लालोनी

पंचमेरु विधान सानन्द सम्पन्न

जयपुर : यहाँ श्री दिगम्बर जैन मंदिर दीवान भदीचंदजी घीवालों का रास्ता में श्रीमती तारादेवी धर्मपत्नी श्री भागचन्दजी शाह आबूजीवालों की ओर से दिनांक 19 जून 2002 को पंचमेरु विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर आपके द्वारा ब्र. यशपालजी जैन द्वारा सम्पादित पंचपरमेष्ठी एवं सूक्ति-संग्रह नामक पुस्तकों का वितरण किया गया।

विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य पण्डित सुनीलकुमारजी नाके के निर्देशन में श्री संजीवकुमार गोधा, श्रीमती प्रभा जैन एवं श्रीमती सोहिनी देवी ठोलिया के सहयोग से सम्पन्न हुये।

भक्तामर मण्डल विधान सानन्द सम्पन्न

जयपुर : यहाँ श्री पार्श्वनाथ दिग. जैनमंदिर, वासगोधान में भक्तामर स्तोत्र के अखण्डपाठ के उपरान्त दिनांक 26 जून 2002 को श्री प्रेमचन्दजी गोधा एवं श्री महेन्द्रकुमारजी गोधा द्वारा भक्तामर मण्डल विधान का आयोजन किया गया। विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य पण्डित श्री रतनलालजी नृपत्या एवं पण्डित संजीवकुमारजी गोधा द्वारा सम्पन्न कराये गये । कार्यक्रम में श्री विजयकुमारजी गोधा आदि अनेक लोगों का सक्रिय सहयोग रहा।

आगामी कार्यक्रम ....

आध्यात्मिक एवं बाल संस्कार शिविर का आयोजन

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन शाखा करेली द्वारा आयोजित एवं कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान, उज्जैन द्वारा संचालित विशाल आध्यात्मिक एवं बाल संस्कार शिविर का आयोजन करेली (नरसिंहपुर) में श्रुतपंचमी महापर्व के अवसर पर दिनांक 9 जून से 15 जून तक किया जायेगा।

शिविर के दौरान पण्डित विमलचन्दजी झांझरी उज्जैन, डॉ. उत्तमचन्दजी सिवनी, पण्डित प्रदीपजी झांझरी उज्जैन, पण्डित छोटे बाबूभाईजी मेहता फतेहपुर आदि के सान्निध्य में मुमुक्षु मांगलिक भवन का शिलान्यास, चित्रों का अनावरण, आचार्य धरसेन व कुन्दकुन्द की चरणस्थापना आदि मंगल कार्य भी सम्पन्न होंगे।

जून माह में आनेवाली 24 तीर्थंकरों के पंचकल्याणकों की तिथियाँ

1 जून	- भगवान श्रेयांसनाथ का गर्भकल्याणक
5 जून	- भगवान विमलनाथ का गर्भकल्याणक
7 जून	- भगवान अनंतनाथ का जन्म एवं तप कल्याणक
9 जून	- भगवान शान्तिनाथ का जन्म, तप एवं मोक्ष कल्याणक तथा भगवान धर्मनाथ का मोक्षकल्याणक
10 जून	- भगवान अजितनाथ का गर्भकल्याणक
15 जून	- श्रुतपंचमी पर्व
21 जून	- भगवान सुपार्श्वनाथ का जन्म एवं तप कल्याणक
26 जून	- भगवान आदिनाथ का गर्भकल्याणक
30 जून	- भगवान वासुपूज्य का गर्भकल्याणक

निबन्ध लेखन प्रतियोगिता

अनेकान्त ज्ञान मंदिर शोध संस्थान, बीना द्वारा श्रुतपंचमी पर्व वर्ष 2002 के पावन अवसर पर 'णाणं णरस्य सारो' ज्ञान ही मनुष्य जीवन का सार है - इस विषय पर अधिकतम दस पृष्ठों के निबन्ध आमंत्रित किये गये हैं। निबन्ध जमा कराने की अन्तिम तिथि 30 जून 2002 है। पुरस्कारों की घोषणा 25 जुलाई को की जायेगी। श्रेष्ठ चार निबन्धों पर श्रुतसंवर्द्धन पुरस्कार प्रदान किया जायेगा।

- अनेकान्त ज्ञान मंदिर शोध संस्थान, बीना - 470113 (सागर)
फोन - (07580) 22279

विधान सानन्द सम्पन्न

मन्दसौर : यहाँ श्री 1008 सीमंधर जिनालय एवं स्वाध्याय भवन में पण्डित सुधाकरजी शास्त्री एवं पण्डित संतोषजी शास्त्री रतलाम से पधारे। विद्वानद्वय के प्रतिदिन प्रवचन हुये। इस अवसर पर बीस तीर्थंकर विधान का आयोजन भी किया गया। सायंकाल बाल कक्षा के पश्चात् भक्ति का कार्यक्रम भी होता था। दिनांक 14 मई को गुरुदेवश्री कानजीस्वामी की जन्मजयन्ती मनाई गई, जिसमें पाठशाला के बच्चों व अन्य विद्वानों के भाषण हुये।

जैनपथप्रदर्शक (पाक्षिक) **जून (प्रथम) 2002**
आई. आर. / R. J. **3002/02**

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित अनुभवप्रकाश** जैनदर्शनाचार्य, एम.ए., बी.एड. एवं **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए-4, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो कृपया निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 515581, 515458
तार : त्रिमूर्ति, जयपुर **फैक्स :** 704127